परिशिष्ट

भौगोलिक शब्दों का विस्तारित अर्थ

- **अपपर्णन** (*Exfoliation*): चट्टानों की परतों के अलग होने की भौतिक अपक्षय क्रिया को अपपर्णन कहते हैं । सूर्य की उष्मा से चट्टानें तपती हैं; इस कारण चट्टानों मे स्थित खनिजों का सिकुडन-प्रसरण होकर चट्टानों में कणात्मक तणाव निर्माण होता है । चट्टानों के ऊपरी/बाहरी भागों में इसका अधिक परिणाम होता है, इसलिए एक में से एक ऐसी परतें अलग हो जाती हैं ।
- **अपक्षरण** (*Erosion*): छीजन अथवा घीसना । चट्टानों का कारकों के माध्यम से घीस जाना । पवन, नदी, हिमानी, समुद्री लहरें एवं भूजल कारकों से चट्टानों की अखंडित छीजन होती है । चट्टानों का छीजन मुख्यत: कारकों के बहने से प्राप्त गतिजन्य ऊर्जा से होता है । गतिजन्य ऊर्जा बहने वाले पदार्थों के द्रव्यमान और बहने की गति इन पर निर्भर होती हैं ।
- **अवक्षेपण** (*Precipitation*): किसी द्रावण में घुला हुआ घनरूप पदार्थ, द्रावण से पुन: घनरूप में आने की क्रिया को अवक्षेपण कहते हैं । कार्बनन अथवा द्रवीकरण इनके जैसे रासायनिक अपक्षय प्रक्रिया से चट्टानों में लवण विद्राव्य रूप में जल के साथ बहा कर ले जाते हैं । वही लवण जल में वाष्पीभवन होकर पुन: एखाद स्थल पर घनरूप में संचित होता है । अर्थात यह लवण अवक्षेपित हुआ; ऐसा कहा जाता है । चुने के पत्थर के प्रदेशों में निर्मित होने वाले लवण स्तंभ; यह अवक्षेपण प्रक्रिया का उदाहरण है ।
- **अभिसरण** (*Convection*) : ऐसे प्रवाह जिसकी भू-हलचलें ऊर्ध्व, अध: तथा चक्रीय दिशा में होती हैं। जैसे : ऊबलते जल में तैयार होने वाले प्रवाह ।
- **अदृश्य व्यापार** (*Invisible Trade*) : जिस व्यापार में वस्तुओं का लेन-देन नहीं होता उसे अदृश्य व्यापार कहते हैं । सेवा व्यवसाय यह अदृश्य व्यापार का उदाहरण है । पर्यटन व्यवसाय भी अदृश्य व्यापार ही माना जाता है ।
- **अधोगामी हलचलें** (*Downward Movement*) : किसी पदार्थ की नीचे (पाताल) की दिशा में होने वाली हलचलें अर्थात अधोमुखी हलचलें कहलाती हैं। पृथ्वी के आंतरिक भागों में ऐसी हलचलें होती रहती हैं ।
- **अंतर्गत व्यापार** (*Internal Trade*) : किसी प्रदेश के सहायक विभागों में होने वाले वस्तु और सेवाओं के आदान-प्रदान को अंतर्गत व्यापार कहते हैं ।
- **अंतरराष्ट्रीय तिथि रेखा** (*International Date Line*) : १८०° देशांतर रेखा के संदर्भ में मानी गई काल्पनिक रेखा। यात्रियों को १८०° देशांतर रेखा को पार करते समय, दिनांक तथा वार में परिवर्तन करना पड़ता है । पूर्व दिशा की ओर यात्रा करते समय एशिया-आस्ट्रेलिया से अमेरिका महाद्वीप की ओर यात्रा करते समय वही दिनांक तथा दिन मानना पड़ता है; परंतु पश्चिम की ओर यात्रा करते समय अर्थात अमेरिका महाद्वीप से एशिया-आस्ट्रेलिया की ओर यात्रा करते समय आगे का तिथि तथा वार मानना पड़ता है। वह रेखा पूर्ण रूप से समुद्री भागों से निर्धारित की गई है ।
- **अंतरराष्ट्रीय व्यापार** (*International trade*): देश-विदेशों में चलने वाला व्यापार । इन्हें आयात-निर्यात व्यापार भी कह सकते हैं । ऐसा व्यापार द्विपक्षीय (bilateral) अथवा बहुपक्षीय हो सकता है । इसमें एक देश का उत्पादित माल दूसरे देश में मूल्य देकर भेजते हैं; या मँगवाते हैं ।
- **उत्पादक** (*Producer*) : निर्मिति अथवा उत्पादन करने की प्रक्रिया को उत्पादक कहा जाता है । किसी वस्तु का प्राकृतिक अथवा कृत्रिम पद्धति का उपयोग निर्मिति करने वाले व्यक्ति को उत्पादक कहते हैं ।
- **उद्धरणक्षमता** (*Buoyant Ability*) : किसी द्रव्य का ऊर्ध्वाधर दिशा में कार्य करने वाला बल जो कि, तरंगों के कारण वस्तु के भार में वृद्धि करते हैं । द्रव्य के बढ़ते घनत्व के अनुसार उद्धरण बल बढ़ता है ।
- **उद्देशात्मक मानचित्र** (*Thematic Maps*) : विशिष्ट उद्देश्य को ध्यान में रखकर बनाए जाने वाले मानचित्र ।
- **ऊर्ध्वगामी हलचलें** (*Upward Movement*) : ऊपर की दिशा में किसी पदार्थ की होने वाली हलचलें (क्रियाएँ) ऊर्ध्वगामी हलचलें कहलाती हैं । पृथ्वी के अंतर्गत ऐसी हलचलें होती हैं ।
- **ऊर्मि चिह्न** (*Ripples*): जब पवन अथवा पानी का प्रवाह खुली (loose) बालू से बहते हैं । तब तल की बालू प्रवाह से खींची अथवा ढकेली जाती है; और प्रवाह के लंबरूप दिशा में बालू के तरंग तैयार होते हुए दिखते हैं। समुद्री किनारे पर बालू के पुलिन पर; उसी प्रकार बरखान को पवन की ढलान पर ऐसी 'उर्मि चिह्न देखने मिलते हैं ।

- **कणात्मक अपक्षय** (*Granular Weathering*) : चट्टानों के कण खुले होकर होने वाले अपक्षय को कणात्मक अपक्षय कहते हैं । विशेषत: बालुकाश्म, पिंडाश्म जैसी चट्टानों में से संधानक द्रव निकल जाने से, साथ के कण खुले होकर ऐसा अपक्षय हो जाता है ।
- **भौतिक अपक्षय** (*Mechanical Weathering*) : वातावरण के संपर्क में आकर चट्टानों का विच्छेदन होने की प्रक्रिया को भौतिक अपक्षय कहते हैं । इसमें मुख्यत: औष्णिक ऊर्जा, स्फटीकीकरण, दाब मुक्ति आदि प्रक्रियाओं का समावेश होता है ।
- **खुदरा (चिल्लर) व्यापारी** (*Retailers*) : थोक व्यापारी तथा उपभोक्ता के बीच की यह कड़ी होती है । थोक व्यापारियों से वह माल लेकर उपभोक्ताओं को उपलब्ध करवाने का कार्य खुदरा व्यापारी करता हैं ।
- **किरणोत्सारी पदार्थ** (*Radioactive Substances*) : उच्च अणुअंकवाले मूलद्रव्य में अदृश्य, अति पारदर्शि/छेदक और उच्च क्षमता की किरणें उत्स्फूर्तता से उत्सर्जित होती हैं । ऐसे गुणधर्मों के पदार्थों को किरणोत्सारी पदार्थ कहते हैं । जैसे -यूरेनियम, थोरियम, रेडियम
- **कृष्णधवल (श्वेत-श्याम) प्रतिरूप** (*Black and White Patterns*) : मानचित्र के उप विभाग दिखाने के लिए काले रंग का उपयोग कर विविध रंगपटल तैयार किए जाते हैं । ऐसे प्रतिरूप को श्वेत-श्याम प्रतिरूप कहते हैं ।
- **खंड-विखंडन** (*Block Disintegration*) : चट्टानों के जोड़ एवं दरारों में पानी रिसने से होने वाला अपक्षय । इसमें मुख्यत: जोड़ अथवा दरारें चौडी हो जाती है और चट्टानों के भाग खुले हो जाते हैं ।
- **खार-कच्छ** (*Lagoon*): खाजन के समुद्री किनारों पर खाजन और कंकण द्विपीय खार-कच्छ (atoll Lagoon) ऐसे दो प्रकार किए जाते हैं । दोनों प्रकारों में खार-कच्छ झीलें उथली होती हैं और वे मुख्य समुद्र से विभक्त होती हैं। इनपर ज्वार-भाटा का परिणाम नहीं होता, लहरें अधिकता से नहीं उछलती । किनारों पर खार-कच्छ यह बालु के निक्षेपण से निर्मित होते हैं । कंकणाद्विपीय खार-कच्छ प्रवाल कीडों के कारण (Coral reets) मुख्य समुद्र से अलग हुई होती हैं।
- **कंदरा** (*Caves*): प्राकृतिक रूप से निर्मित हुई जमीन के नीचे की खुली जगह को कंदरा कहते हैं । कंदरा की निर्मिति चट्टानों के रासायनिक अपक्षय के कारण होती है । चुने के पत्थर के प्रदेशों में अनेक छोटी-बड़ी कंदराए दिखाई देती हैं । ऐसे कंदरा में लवणस्तंभ निर्मित होते हैं । चूने के पत्थर के प्रदेश के सिवा अन्यत्र भी कंदरा निर्मित होती हैं। समुद्री किनारे पर स्थित कंदरा यह रासायनिक अपक्षय एवं लहरों द्वारा होने वाले छिजन के कारण निर्मित होते हैं । कंदरा मानव निर्मित भी हो सकते हैं । जैसे - अजंता कंदरा, एलोरा कंदरा आदि ।
- **गुरुत्वाकर्षण बल** (*Gravitational Force*) : कोई भी द्रव्यमान वाली वस्तु किसी अन्य द्रव्यमान वाली वस्तु को अपनी ओर आकर्षित करती है, इस आकर्षण को गुरुत्वाकर्षण बल कहते हैं । जिस वस्तु की द्रव्यमान अधिक होता है उसका गुरुत्वीय बल भी अधिक होता है । गुरुत्वाकर्षण बल दोनों बातों अर्थात द्रव्यमान और उनके अंतर पर निर्धारित किया जाता है ।
- **उपभोक्ता** (*Buyer*) : वस्तु अथवा सेवाओं के बदले मूल्य देने वाला अर्थात उपभोक्ता ।
- **गभीरखड्ड** (*Gorge*) : गहरी एवं संकरी घाटी को गभीरखड्ड कहा जाता है । गभीरखड्ड का ढ़ाल अत्यंत तीव्र और लगभग ऊर्ध्व होता है ।
- **थोक बाजारकेंद्र** (*Wholesale Market*) : ऐसा बाजारकेंद्र जहाँ यह उत्पादक का माल बड़े व्यापारी खरीदते हैं । ऐसे व्यापार केंद्र में खुदरा खरीदारी करनेवाले उपभोक्ता सामान्यत: नहीं खरीदी करते हैं ।
- **छिन्न-भिन्न** (*Shattering*) : यह भौतिक अपक्षरण का एक प्रकार है । जिन शीत-कटिबंधों में तापमान शून्य अंश से. भी कम होता है, तब चट्टानों के अंदर पानी जम जाता है । सधन हुए जल को अधिक जगह की आवश्यकता होती है । जिससे चट्टानें फूटती है और उसके टुकड़े छिन्न-भिन्न होकर अन्यत्र फैलते हैं ।
- **जैविक अपक्षरण** (*Biological Weathering*) : सजीवों द्वारा होने वाला अपक्षय ।
- **बिंदु पद्धति** (*Dot Method*) : वितरण मानचित्र तैयार करने की एक पद्धति । इस पद्धति में गिनती करके प्राप्त होनेवाली सांख्यिकीय जानकारी का उपयोग किया जाता है। जैसे - जनसंख्या, पशुधन संख्या आदि । ऐसे मानचित्र बनाते समय प्रदेश की प्राकृतिक संरचना, परिवहन मार्ग,

नदी प्रणाली आदि घटक जो वितरण पर परिणाम करते हैं उनका भी विचार किया जाना चाहिए ।

- **तरंगघर्षित मंच** *(Wave Cut Platform)* : समुद्री लहरों के प्रतिघात से चट्टानयुक्त किनारों पर होने वाला एक भूरूप । ऐसे मंच सामान्यत: समुद्र के कमानी तल के पास तैयार होते हैं ।

- **अभाव स्थिति** *(Deficit)* : किसी वस्तु की माँग की अपेक्षा आपूर्ति कम होने की स्थिति ।

- **डेल्टा प्रदेश** *(Delta)* : नदी के निक्षेपित कार्यों से नदी के मुख्य मुहाने तक तैयार होने वाला एक भूरूप । नदी के निचले हिस्से में प्रवाह की गति अति संथ होती है; तो जल का प्रमाण बढ़ा हुआ रहता है । प्रवाह के साथ बहकर आया हुआ काँप नदी के पात्रों में ही सिंचित होता है और नदी का प्रवाह अनेक उपप्रवाह के स्वरूप में विभाजन होता है। ऐसे प्रवाह को एकत्रित (गुंथित) प्रवाह कहते हैं । आगे नदी जहाँ पर समुद्र से मिलती हैं उस प्रदेश में समुद्र की लहरें नदी प्रवाह को विरोध करती है । उसी कारण काँप बड़े पैमाने पर सिंचित होता है । मूल प्रवाह से अनेक उपप्रवाह बाहर निकलते हैं और वे स्वतंत्र रूप से समुद्र को मिल जाते हैं। ऐसे स्वतंत्र रूप से समुद्र से मिलने वाले उपप्रवाहों को वितरिकाएँ कहते हैं । दो वितरिकाओं के बीच का भाग काँप से बना रहता है । इस भूरूप का समुद्र की ओर का भाग चौड़ा होता है तो पीछे वाला भाग सँकरा होता है । यह भाग कोई त्रिभुज जैसा दिखाई देता है । इसलिए इसे (त्रिभुज) डेल्टा प्रदेश कहते हैं ।

- **पत्थरफूल** *(Lichen)* : कवक और शैवाल इनके एकत्रीकरण से तैयार होने वाले अनेक प्रारंभिक वनस्पतियों में से एक वनस्पति अर्थात पत्थरफूल कहलाती है । यह चट्टानों पर, दीवार पर तथा वृक्षों के तनों पर पाई जाती हैं।

- **तुषार (पाला)** *(Frost)* : भूपटल से लगकर वाष्प का संघनन होकर तैयार होने वाले हिमकण अर्थात तुषार या पाला कहलाता है । यह अधिकांशत: वनस्पतियों के पत्तों तथा खिड़कियों के काँच पर दिखाई देते हैं ।

- **दृश्य व्यापार** *(Visible Trade)* : जिस व्यापार में वस्तुओं का क्रय-विक्रय होता है तथा वस्तुओं का लेन-देन प्रत्यक्ष रूप में दिखाई देता है, ऐसे व्यापार को दृश्य व्यापार कहते हैं ।

- **द्रवचलित** *(Hydraulic)*: द्रवसंदर्भीय, द्रव के दबाव का परिणाम से होने वाली छीजन । ऐसी छीजन समुद्री लहरों के मार्फत खुरदरे किनारों पर दिखाई देती है । लहरें जब पत्थरिले किनारों के पास आती हैं तब वह जोर से उछलकर किनारों पर टकराती है ऐसी लहरें किनारे पर टूटती हैं तब उनके गहरे भागों की हवा पानी में बंदिस्त हो जाती है । लहरें चट्टानों पर आकर टूटती हैं। ऐसी बंदिस्त हवा लहरों के दबाव से खुली होती है । इस क्रिया से प्रचंड ऊर्जा खुली होकर चट्टानों की तलहटी पर बड़ा आघात होकर चट्टानों की छीजन होती है ।

- **घुलनशीलता** *(Solubility)* : किसी द्रव के अन्य पदार्थ में घुलने की क्षमता, घुलनशीलता कहलाती है ।

- **प्रति व्यक्ति आय** *(Per capital Income)* : देश की कुल जनसंख्या और कुल राष्ट्रीय उत्पादन इनका अनुपात ही प्रति व्यक्ति आय हैं। इन्हें प्रति व्यक्ति उत्पादन भी कह सकते हैं । उदा. व्यक्ति अथवा परिवार का सभी मार्गो से प्राप्त होने वाला कुल उत्पन्न ।

- **नगरीय जनसंख्या** *(Urban Population)* : नगरों में रहने वाले लोगों की जनसंख्या अर्थात नगरीय जनसंख्या। नगरों में रहने वाले अधिकांश लोग द्वितीयक अथवा तृतीयक व्यवसाय से जुड़े होते हैं ।

- **वर्षा मापक** *(Rain Gauge)* : वर्षा का मापन करने वाले उपकरण को वर्षा मापक कहते हैं । सामान्यत: वर्षा मापक में इकट्ठे हुए वर्षा जल को वर्षा मापक द्वारा मापकर वर्षा की मात्रा बताई जाती है । अंकित वर्षामापक द्वारा दिनभर (अथवा विशिष्ट समयावधि में) में हुई वर्षा का आलेख बताया जाता है ।

- **पंखाकृति मैदान** *(Alluvial Fan)*: पर्वतीय क्षेत्रों से बहने वाली नदी जब मैदानी प्रदेश में प्रवेश करती है तब उसकी गति एकदम कम हो जाती है । नदी के साथ बहकर आया हुआ काँप उसके पात्र में संचित होता है । वे निक्षेपित पंखे समान दिखता है, इसलिए इसे पंखाकृति मैदान कहते हैं । निमशुष्क प्रदेश में ऐसे मैदान देखने को मिलते हैं । हिमालय के तलहटी में विशेषत: शिवालिक पर्वत श्रेणी को छोड़कर नदी भारतीय मैदानी प्रदेशों में आती है । वहाँ पर विशेषत: ऐसे मैदान दिखाई देते हैं । जैसे - कोसी नदी से बना हुआ पंखाकृति मैदान ।

- **पर्यटक** *(Tourist)* : मनोरंजन अथवा मन बहलाने के लिए प्राप्त करने के लिए विभिन्न भागों में भेंट देने और कुछ समय वहाँ वास्तविक यात्रा करने वाले यात्रा अथवा प्रवासी।
- **पर्यटन स्थल** *(Tourist Places)* : पर्यटकों को आकर्षित करने वाले स्थान जैसे - प्राकृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक आदि स्थान । ऐसे स्थानों पर पर्यटक यात्रा करने जाते है ।
- **पुलिन** (*Beach*) : दो अंतरीपों दरमिआन का भाग अंतरीपों की समुद्री लहरों के आघातों से थोड़ा-सा सुरक्षित होता है। फलस्वरूप इस क्षेत्र में बड़ी मात्रा में निक्षेपण होता है। किनारों की ओर आने वाली लहारों का निरंतर वक्रीभवन होता रहता है। इस वक्रीभवन प्रवृत्ति के कारण अंतरीपों के भागों में लहरें एकत्रित होती हैं, तो दो अंतरीपों के दरमियान वह विभाजित होती हैं । परिणामत: उनमें संचित ऊर्जा भी विभाजित होती हैं । इसलिए लहरों की वहन शक्ति कम होती है और लहरों के साथ बहाकर लाई बालु का निक्षेपण होता है । यह क्रिया निरंतर होने से इस भाग में बडी मात्रा में बालु निक्षेपण होकर पुलिन निर्मित होती है । पुलिन सहसा दो अंतरीपों दरमिआन समुद्री दिशा में अंतर्वक्र होती हैं ।
- **पिडांश्म** *(Conglomerate)* : नदी के तल भाग में पत्थरों का कीचड़ के कारण एकत्र आकर और उन पर दबाव पड़ने से बने चट्टान । इसमें पत्थर आँखों से सुलभता से देखे जा सकते हैं ।
- **बाढ़ के तट और बाढ़ के मैदान** (*Flood Levees and Flood Plains*): नदी के निक्षेपण प्रक्रिया से तैयार होने वाले भूरूप, नदी के पात्र में जल का स्तर बढ़ जाने से तटों की अपेक्षा अधिक होने से नदी का जल तट को लाँघकर आस-पास के प्रदेश में फैल जाता है । इसेही बाढ़ आना कहते हैं । नदी में बाढ़ के प्रवाह के साथ बड़े पैमाने पर जलोढ़ आ जाता है; उसमें से खुरदरी काँप नदी के तट की ओर संचित होता हैं तो बचा हुआ काँप प्रवाह में फैल जाता है । बाढ़ का जल प्रवाह को लंबवत दिशा में जहाँ तक पहुँचते वहाँ तक के भाग में निलंबित काँप सिंचित होता है । इस प्रदेशों को बाढ़ का मैदान कहते है । बाढ़ के जल के साथ आया हुआ खुरदरा काँप नदी के तट पर सिंचित होता है एवं हमेशा ऐसा काँप तट पर सिंचित होने से वहाँ की ऊँचाई बढ़ती जाने से नदी पात्र को समांतर ऐसा ऊँचा भाग निर्मित होता है । ऐसे ऊँचे हिस्से को बाढ़ तट हिस्सा कहते हैं ।
- **प्रस्तरभंग** *(Fault)* : अंतर्गत भूहलचलों के कारण चट्टानों पर दबाव पड़ने से चट्टानों में दरारे पड़ती हैं । इन दरारों को प्रस्तरभंग अथवा विभंग कहा जाता है । वलीकरण की स्थिति में अत्यधिक दाब पड़ने के कारण भी प्रस्तरभंग हो सकता है ।
- **बाजार समितियाँ** *(Market Committees)* : उत्पादकों को अपने माल की बिक्री सुलभता से करने के लिए तथा व्यापारियों को एक ही स्थान पर सभी वस्तुएँ मिल सकें इसलिए बाजार समितियों की स्थापना की गई हैं । इसमें मुख्यत: कृषि संबंधी वस्तुओं का विस्तृत मात्रा में विक्रय व विपणन इन बाजार समितियों के द्वारा करना आसान होता है ।
- **बरखान** (*Barkhan – Cresent shaped Sand Dune*) : चंद्रकला जैसे आकार की दिखनेवाली बालुकागिरियों को बरखान कहते हैं । इस चंद्रकला की बहिर्वक्र ढलान पवन की दिशा में तो अंतर्वक्र ढलान पवन की विपरित दिशा में होता है । पवन की दिशा की ओर की बहिर्वक्र ढ़लान संथ होती है और अंतर्वक्र ढ़लान तीव्र होती है । पवन के साथ बहकर आने वाली रेत के कणों, पवन के लिए रुकावट होने से अथवा पवन की गति कम होने से निक्षेपण होने लगता है और रेत का ढ़ेर तैयार होता है। ढ़ेर के पास पवन का प्रवाह विभाजित होता है और पवन ढेर के दोनों दिशाओं से प्रवाहित होता है । ढेर के बाजूवाले कण पवन की दिशा में आगे सरकने लगते हैं और ढेर को चंद्रकोर जैसा आकार प्राप्त होता है । बरखान के वाताभिमुख (पवन की ओर मुँह किया हुआ) ढलान पर निरंतर बालू के कण आते रहते हैं; इसलिए इस बाजू की ढलान पर ऊर्मि चिह्न देखने मिलती हैं ।
- **ऑक्सीकरण** *(Oxidation)* : रासायनिक अपक्षय का यह एक प्रकार है । जब लौह खनिज का ऑक्सीकरण के साथ रासायनिक प्रक्रिया होने से चट्टानों में से लौह पर जंग चढ़ जाता है । किसी मूलद्रव्य का ऑक्सीकरण के साथ होने वाली रासायनिक क्रिया को ऑक्सीकरण (भस्मीकरण) कहते हैं ।
- **भूपट्टिका** *(Plats)* : यह भूपटल प्रावार पर स्थिर हुआ है लेकिन भूपटल एकसंध नही हैं । भूपटल के छोटे-बड़े टुकड़े हुए हैं । ये टुकड़े अलग-अलग अवस्था में प्रावार में तैरते हैं । स्वतंत्र रूप में विहार करते हैं । इन टुकड़ों को भूपट्टिका कहते हैं ।

- **भूछत्र चट्टान** (*Mushroom Rock*) : पवन के छीजन कार्य से तैयार होने वाला भूरूप ।
- **भूवेष्टित** *(Land Locked)* : भूमि से घिरा हुआ । १) कुछ सागर पूर्ण रूप से भूमि पर हैं । वे किसी भी महासागर से जुड़े हुए नहीं है । इसलिए उन्हें भूवेष्टित सागर कहा जाता है । जैसे - अरल, कैस्पियन आदि । २) जिन राष्ट्र को समुद्री किनारा नही है, ऐसे राष्ट्रों को भी भूवेष्टित राष्ट्र कहा जाता है । जैसे - नेपाल, भूटान आदि ।
- **भूस्खलन** *(Landslide)* : पर्वत की ढलान पर बड़े पैमाने पर अपक्षय चट्टानों की परते होती हैं । ये परतें कुछ फुसफुसा होने के कारण उसमें वर्षा के समय जल बड़े पैमाने पर रिसता है । इसलिए इन परतों का भार बढ़ जाता है और वे पर्वत तलहटी की ओर खिसकने लगती हैं । खिसकने की गति बढ़ने से कुछ क्षणों में ही मिट्टी का बड़ा ढेर नीचे की ओर गिरता है । भूस्खलन भूकंप के कारण भी होता है।
- **माँग** *(Demand)* : लोग जो वस्तु तथा सेवा की निश्चित कीमत पर खरीदने को तैयार रहते हैं उसका परिणाम याने माँग । वस्तु तथा सेवा का मूल्य भी माँग के अनुसार बदल सकता है ।
- **मृदा सर्पण (मातलोट)** *(Solifluction)* : मंद गति से होने वाले विशाल छिजन का एक प्रकार । समशीतोष्ण प्रदेश में जहाँ तापमान कुछ समय तक शून्य अंश से भी कम होता है, वहाँ जल का जम जाना और बर्फ का पिघलना ये क्रियाएँ हमेशा होती हैं ऐसे स्थानों पर मृदा सर्पण का यह विशाल छिजन प्रमुखत: दिखाई देता है ।
- **मेषशिला** (*Roche Moutonnee*):हिमनदी के पात्रों में दिखाई देने वाला एक भूरूप । इसकी निर्मिति हिमनदी के छीजन कार्य से होती है । हिमनदी के मार्ग में स्थित चट्टानों पर से हिमनदी जाते समय चट्टानों पर हिमनदी की दिशा की ओर का भाग घर्षण से मुलायम बनता है लेकिन प्रवाह की दिशा की ओर के भागों में पिघले हुए जल से अपक्षय होकर चट्टानों के टुकड़े खुले होकर वह भाग खुरदरा हो जाता है । इस भूरूप को मेषशिला कहा जाता है ।
- **यारदांग** *(Yardang)* : पवन के क्षरण एवं अपवहन जैसे दुगुने कार्य के कारण मूल चट्टान का अथवा एकसंध बने निक्षेपित का छिजन एवं वहन होने से बने भूरूप । इन भूरूपों का आकार किसी उलटी पड़ी नौका जैसे दिखाई देता है । यारदांग का पवन की ओर वाली ढलान तीव्र होती है तो पवन के विपरित दिशा की ढलान मंद होती है । प्रदेश में यदि कठिन एवं मृदु प्रकार की चट्टाने होंगी; तो मृदु चट्टान का भाग गहरा बनता है तो कठोर चट्टान का भाग लंबे ऊँचाई के रूप में दिखाई देता है ।
- **रंग छटाएँ** *(Colour Tints)* : उद्देशात्मक मानचित्र में विविध प्रदेश दिखाने के लिए विभिन्न रंगों का उपयोग किया जाता है । समघनी तथा क्षेत्रघनी मानचित्र में एक ही रंग की अलग-अलग छटाएँ उपयोग में लाई जाती हैं । ये छटाएँ मूल्य पर आधारित होती है । कम मूल्य वाले प्रदेश में रंग हल्का तथा अधिक मूल्य वाले प्रदेश में रंग गाढ़ा होता है ।
- **रासायनिक अपक्षय** (*Chemical Weathering*) : रासायनिक क्रियाओं द्वारा होनेवाला अपक्षय । यह अपक्षय विशेषत: नम मौसमी प्रदेश में होता है । इसमें मुख्यत: कार्बनन, विलयन, ऑक्सीकरण आदि क्रियाएं होती हैं । विषुवतरेखीय प्रदेश में रासायनिक अपक्षय जादा गहराई तक होता है ।
- **लवणस्तंभ** (*Stalactite and Stalagmite*): चुने के पत्थर के प्रदेश में विशेषत: कंदरों में तैयार होने वाले क्षार के स्तंभ । भूजल के साथ बहकर आए क्षार जल का वाष्पीभवन होने के बाद कंदरों में संचित होते हैं । क्षार संचित होने से कंदरों के छत के नीचे तथा तल से ऊपर की ओर स्तंभ तैयार होते हैं । छत से तल की ओर बढ़ने वाले स्तंभ को अधोमुखी स्तंभ तो; तल की ओर से छत की दिशा में बढ़ने वाले स्तंभ को ऊर्ध्वमुखी लवणस्तंभ कहते हैं। आंध्रप्रदेश के विशाखापट्टनम जिले में बोरा कंदार यह भारत में चूने के पत्थर की प्रमुख कंदरों में से एक है ।
- **लंबित घाटी** (*Hanging Valley*) : हिमानी के खनन कार्य से निर्मित एक भूरूप घाटी को लंबित घाटी कहते हैं । मुख्य हिमानी से मिलने वाली सहाय्यक हिमानी की तुलना में बर्फ की मात्रा कम होती है । इसलिए उससे अपक्षरण कार्य कम मात्रा में होता है । मुख्य हिमानी में बर्फ उसके पात्र में पूर्ण ऊँचाई तक संचित होता है । मुख्य एवं सहाय्यक हिमानी का संगम होते समय उनके तल की ऊँचाई की अपेक्षा दोनों प्रवाहों के बर्फ की ऊँचाई समान होती है । सहायक हिमानी का तल मुख्य हिमानी के तल की अपेक्षा अधिक ऊँचा होता है । केवल बर्फ पिघलने पर यह तल की ऊँचाई का अंतर दिखाई देता है । सहायक हिमानी की घाटी मुख्य हिमानी के तल की तुलना में अधिक ऊँचाई पर

होती है और वह लटकती हुई दिखाई देती है । ऐसी घाटी को लंबित घाटी यह संज्ञा उपयोग में लाई जाती है ।

- **वर्गांतर** (*Class Interval*): वर्ग के निम्न और उच्च सीमा में अंतर याने वर्गांतर क्षेत्रघन अथवा समघन मानचित्र निकालते समय घटकों के अधिकतम और न्यूनतम मूल्यों का विचार कर ५ से ७ वर्ग किए जाते हैं । उनके अंतर को वर्गांतर कहते है ।
- **वलीकरण** (*Folding*) : पृथ्वी के प्रावार के भागों की हलचलों का भूपटल पर दबाव पडने से भूपटल को वलय निर्मित होने की क्रिया, याने वलीकरण होता है ।
- **बालू रोधिका** (*Sand bar*): समुद्री तट पर बालु के निक्षेपण से अनेक प्रकार के भूरूप तैयार होते रहते हैं। पुलिन यह उनमें से एक है । पुलिन पर की बालू भी लहरों द्वारा समुद्र में ली जाती है, किंतु ऐसी बालू जादा दूर तक न जाकर अधिकतम भार मर्यादा से थोड़े अंतर पर पुलिन समांतर ऐसे द्विपों के स्वरूप में संचित होती है । कालांतर से यह द्विप मोटी एवं ऊँची होती रहती है । तथा उनकी ऊँचाई ज्वार की अधिकतम मर्यादा से अधिक होती है । और ऐसे द्विपों की श्रृंखला तैयार होती है । ऐसे द्विप एक दूसरे को जुड़ने से सीधी ऐसी बालू की रोधिका तैयार होती है । पुलिन को समांतर रोधिकाओं के कारण खाजण झीलों की निर्मिति होती है ।
- बालुकाश्म (*Sandstone*): बालुका चट्टान यह स्तरित चट्टान का एक प्रकार है ।
- **बालुकागिरि** (*Sand Dune*): पवन के संचयन कार्य से तैयार हुआ एक भूरूप । यह भूरूप विशेषत: गर्म मरुस्थलीय प्रदेश में अथवा समुद्री तट पर दिखाई देते है । आकार के अनुसार बालुकागिरी के बारखान अथवा सैफ ऐसे दो प्रमुख प्रकार किए जाते हैं ।
- **अपक्षय** (*Weathering*): पत्थर एवं वायुमंडल इनकी अंतरक्रिओं में से पत्थर कमजोर बनने की प्रक्रिया । इनका भौतिक, रासायनिक एवं जैविक ऐसे तीन प्रकार हैं ।
- **भ्रंश** (*Fault*): देखिए प्रस्तरभंग
- **घुलनशील** (*Soluble*): घुलनशील होने वाला पदार्थ ।
- **विलय रंध्र** (*Sink hole*): प्रमुखत: चूने के पत्थर के प्रदेश में छीजन कार्य से निर्मित होने वाला एक भूरूप । चूने के पत्थर अथवा अन्य चट्टानों में घुलने वाले पदार्थ अंशिक मात्रा में होते हैं । ऐसे पदार्थ पानी में घुल जाते हैं और जल के साथ वह बहा ले जाते हैं । ऐसी क्रिया होते रहने से उस भाग में कंदराएँ निर्मित होती है । कालांतर से कंदरा का छत अंदर गिरकर जमीन पर गड्ढा तैयार होता है । जमीन पर प्राकृतिक रूप से गिरनेवाले ऐसे गड्ढों को रंध्र कहते हैं। जमीन का जल प्रवाह ऐसे गड्ढे में आकर मिलता हैं।
- **वैश्विक विद्रावक** (*Universal Solvent*) : यह ऐसा विद्रावक है कि जिसमें अधिक से अधिक पदार्थ रिस (घुल) जाते हैं । जल में अनेक पदार्थ घुल जा सकते हैं अत: उसे वैश्विक विद्रावक ऐसा कहते हैं ।
- **समघन पद्धति** (*Isopleth Method*): वितरण मानचित्र तैयार की एक पद्धति । इस पद्धति में बिंदु संदर्भीय सांख्यिकीय जानकारी का उपयोग किया जाता है । अर्थात सांख्यिकीय जानकारी किसी एक स्थान की होती है । जिस चल का वितरण सलग होता है; ऐसी चलों का वितरण की पद्धति का उपयोग किया जाता है । जैसे - ऊँचाई, वर्षामान, तापमान आदि ।
- **समकेंद्री परतें** (*Concentric Layers*): ओले तैयार होते समय ऊर्ध्वगामी प्रवाह के कारण वे हमेशा ऊपर-नीचे होते रहती हैं । अधिक ऊँचाई पर जाने से उनके ओर निकट में बर्फ की नयी परतें संचित होती है । यह क्रिया बार-बार होने से ओलों की एक पर एक ऐसी अनेक परतें तैयार होती हैं। ऐसी परतों को समकेंद्री परतें कहते हैं ।
- **समुद्री कगार** (*Sea Cliff*): चट्टानों वाले किनारे पर समुद्री लहरों द्वारा अपक्षरण कार्य से निर्मित होने वाले भूरूप को समुद्री कगार कहते हैं । समुद्री किनारे तक फैले पहाड़ों अथवा पठारों की तलहटी पर लहरों का निरंतर आघात होते रहता है । इसलिए तलहटी के चट्टानों की छिजन होती रहती है । परिणामत: ऊपरी बाजू के चट्टानों के भाग का आधार नष्ट होने से वे नीचे ढ़ह जाते हैं उनमें से समुद्री कगारों की निर्मिति होती हैं । बहुतांश समुद्री कगारों के तलहटी पर तरंगघर्षित मंच दिखाई देते हैं ।
- **समुद्री कमान** (*Arch*): समुद्र में आवश्यक दूरी तक विस्तारित हुए भूशीर्ष की छिजन होकर समुद्री कमान की निर्मिति होती रहती है । बालुकाश्म अथवा चूने के पत्थर ऐसे स्तरित मृदु चट्टान स्थित भागों में समुद्री कमान अधिक प्रमाण में दिखाई देती हैं । भूशीर्ष की दोनों दिशाओं में तलहटी के भागों पर लहरों का आघात होकर उन भागों की छीजन होती है और कालांतर में समुद्री कमान निर्मित

होती है ।

- **समुद्री कंदरा** (*Sea Caves*): समुद्री कगारों के तलवाले भागों पर लहरों का आघात होकर कंदरों की निर्मिति होती हैं । किंतु कुछ अपवाद छोड़े तो यह कंदरा अधिक गहराई में नहीं होती ।

- **सेवा** *(Services)* : मानवीय व्यवसाय का एक प्रकार । इसमें वस्तु की निर्मिति या व्यापार नहीं होता । इस व्यवसाय में लोग ग्राहकों को विविध सेवाओं की आपूर्ति करते हैं । जैसे - शिक्षक, वकील, डाक्टर आदि ।

- **सैफ** (*Seif*): अरेबियन भाषा में सैफ का अर्थ तलवार होता है । इस प्रकार के बालू के टीले सँकरे और दूर तक फैले होते हैं । वे तलवार जैसी दिखाई देते हैं । इसलिए उन्हें सैफ ऐसा कहते हैं । प्रदेश में हमेशा बहने वाले पवनों की दिशा में उनका आकार नुकीला होता जाता है । इनकी ढलान सँकरी होती है और माथा धारदार होता है । अरेबिया में 'रब-अल्-खलि' इस रेगिस्तान में उसी प्रकार इराण के मरुस्थलीय भागों में सैफ टीलों की श्रेणियाँ २०० किलोमीटर तक फैली हुई दिखाई देती हैं ।

- **सुदूर संवेदन** *(Remote Sensing)* : किसी घटक से प्रत्यक्ष संबंध स्थापित न करते हुए दूर अंतर पर रहने के बाद भी उसी बात की जानकारी मिलना अर्थात सुदूर संवेदन कहलाता है । इस तंत्र के द्वारा हवाई छात्राचित्रण करके अथवा उपग्रह के संवेदन द्वारा पृथ्वी के पृष्ठभाग की जानकारी एकत्र की जाती है । ऐसी जानकारी का उपयोग प्राकृतिक संसाधनों के अध्ययन के लिए किया जाता है ।

- **स्थूल देशांतर्गत उत्पादन** *(Gross Domestic Product)*: संपूर्ण अर्थव्यवस्था में से एक वर्ष के काल में सभी उत्पादित क्षेत्रों का उत्पादन को मिलाना ही स्थूल देशांतर्गत उत्पादन है । इसके लिए देश के आंतरिक प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्रों में से वस्तु एवं सेवा का उत्पादन विचार में लिया जाता है । स्थूल देशांतर्गत उत्पादन के रुपयों का मूल्य ही कुल राष्ट्रीय उत्पन्न होता है।

- **हमादा** (*Hamada*): मरुस्थलीय प्रदेश का एक भूरूप। हमादा यह मुख्यत: मरुस्थलीय प्रदेश में ऊँचा, शुष्क, चट्टानवाले पठारों के स्वरूप में होते हैं । वहन क्रिया के कारण बालू बह जाने से इसपर बालू अल्प मात्रा में रहती है और पठार पर मुख्यत:-पत्थर कंकड़ होते हैं ।

- **हरिता** (*Moss*) : हरिता यह छोटी पुष्पहीन वनस्पती है । इसकी वृद्धि हमेशा नम एवं छाया प्रदेशों में होती है । नम मौसमी प्रदेशों में वृक्षों के तने पर हमेशा दिखाई देती है ।

- **हिमदाह** (*Frostbite*): बहुत ही शीत तापमान में त्वचा और संलग्न ऊतक (issue) घना होता है । बर्फाच्छादित प्रदेश में जाते समय पर्यटकों को अनेक बार हिमदाह की तकलीफ होती है । हिमदाह ज्यादातर हाथ, पैर मुखमंडल, त्वचा पर होता है । गंभीर हिमदाह त्वचा, ऊतक वैसे ही हड्डियों तक होता है ।

- **हिमोढ़ कटक** (*Esker*): हिमोढ़ के निक्षेपण से तैयार हुई सँकरी, लंबाकार फैली हुई सर्पाकार टीलों की श्रेणी.....

- **हिमोढ़गिरि** (*Drumlin*) : हिमोढ़ के संचयन से तैयार होने वाला टीला । यह सामान्यत: लंबगोलाकार (अंडाकृति) होता है । ऐसे अनेक टीलों के भागों को अंड़ों की टोकरी ऐसा भी कहते हैं ।

- **हिमगह्वर और गिरिशृंग** (*Cirque and Horn*): हिमानी के छिजन कार्यों से तैयार होने वाले भूरूप । ये दोनों ही भूरूप हिमानी के उद्गम क्षेत्रों में तैयार होते हैं । हिमवर्षाव होने पर हिम जल के समान तुरंत बहता नहीं तो वह वहीं पर संचित होता है । अर्थात वे पर्वत ढलान पर कम संचित होते हैं । लेकिन तलहटी में जादा पैमाने पर संचित होते हैं । हिम की अनेक परतें संचित होने से नीचे की परतों पर दबाव बढ़ता है । नीचे की परतों का बर्फ में परिवर्तन होता है । हिम का बर्फ में रूपांतर होते समय या पड़ता हुआ दबाव से तल का घर्षण होकर कुछ बर्फ का पानी होता है और वह पानी ढलान की दिशा में धीरे धीरे बहता है । इस क्रिया से हिमानी प्रारंभ होती है । पर्वतों की ढलान पर पड़ा हुआ बर्फ तुरंत नीचे खिसकने लगता है । उससे घर्षण होकर पर्वतों की ढलान तीव्र होती जाती है । फिसला हुआ बर्फ तल की ओर संचित होता है । पिघला हुआ जल अपक्षय होकर तल की ओर और गहरा हो जाता है । ऐसे पर्वतों के तल की ओर के गहरे भाग को हिमगह्वर कहते हैं । यह हिमगह्वर और उसके पीछे का तीव्र पर्वत ढलान कोई महाकाय आराम कुर्सी समान दिखता है । इस वर्णन कुछ समय राक्षसी आराम कुर्सी (जायंटस् आर्म चेअर) भी कर सकते हैं । कोई खुले पर्वतों के भाग में पर्वतों की सब दिशाओं की ढलान के भागों में हिमगह्वर तैयार हुए हैं तो पर्वतों का ऊपर का भाग सिंग जैसा दिखता है, उसे गिरिशृंग कहते हैं । यूरोप, इटली एवं स्विटजरलैंड

इनकी सीमा पर 'मैटर हॉर्न' यह गिरिशृंग (Matter Horn) का प्रसिद्ध उदाहरण है ।

- **क्षारता** *(Salinity)* : जल में क्षार का प्रमाण समुद्री जल में क्षार की मात्रा 'प्रति हजार' इस प्रकार में होती है। साधारणत: समुद्री जल की क्षारता (लवण) की मात्रा ३५%० इतना होता है । याने १००० ग्राम जल में ३५ ग्राम क्षार होते है ।
- **क्षार अपक्षय** (*Salt Weathering*): पत्थरिले सागरी किनारे पर इस प्रकार का अपक्षय मुख्यत: दिखाई देता है। सागर की लहरें पत्थरीले किनारों पर टूटकर उसमें से जल की बूँदे कगारों से टकराती हैं । ऐसा क्षारयुक्त जल चट्टानों में रिसता है । जल का वाष्पीभवन होने पर उनके से क्षार चट्टानों में ही रह जाते हैं । उनका स्फटीकीभवन होते समय चट्टानों के पृष्ठभागों पर छोटे-छोटे रंध्र पडते हैं । छोटे रंध्र की जाली मधुमख्खियों के छत्ते जैसे आकार की दीखती है । इसलिए इन्हें अंग्रेजी में 'हनी कोंब वेदरिंग' कहा जा सकता है ।
- **क्षितिज** *(Horizon)* : आकाश जहाँ जमीन को जहाँ मिला हुआ प्रतीत होता है, वह काल्पनिक रेखा क्षितिज कहलाती है । इस रेखा पर सूर्य, चंद्र आदि खगोलीय वस्तुएँ दृश्यमान होने पर उनका उदय हुआ और अदृश्य होने पर उनका अस्त हुआ ऐसा कहा जाता है ।
- **क्षेत्रघन पद्धति** (*Choropleth method*): वितरण मानचित्र तैयार करने की एक पद्धति । इस पद्धति में क्षेत्र संदर्भीय सांख्यिकी जानकारी का उपयोग किया जाता है। संपूर्ण क्षेत्र में एक ही मूल्य होता है । और अलग-अलग विभागों के मूल्यों के अनुसार विभिन्न रंग छटाओं के प्रयोग से मानचित्र बनाए जाते हैं ।
- **'V' आकारवाली घाटी** (*'V' Shaped Valley*): नदी के छीजन कार्यो से होने वाला एक भूरूप 'V' आकार की घाटी नदी के उद्गम स्थान अथवा नदी के कार्यों के प्रारंभिक समय में तैयार होते हैं । नदी के प्रवाह के नजदीक खड़ी छीजन बड़े पैमाने पर होती है । उसकी तुलना में घाटी के पार्श्व उतार के भागों में कम छिजन होती है । इसलिए उनकी ऊँचाई ज्यादा होती है, केवल नदी के बीचवाला भाग गहरा हो जाता है, परिणामत: इस घाटी को 'V' इस अंग्रेजी वर्ण जैसा आकार प्राप्त हो जाता है ।

***

संदर्भ साहित्य :

- Physical Geography– A. N. Strahler
- Living in the Environment– G. T. Miller
- A Dictionary of Geography– Monkhouse
- Physical Geography in Diagrams– R.B. Bunnett
- Encyclopaedia Britannica Vol.– 5 and 21
- Population Geography– Dr S. B. Sawant
- मराठी विश्वकोश खंड– १,४,९,१७ व १८
- प्राकृतिक भूगोल– प्रा. दाते व सौ. दाते
- इंग्रजी–मराठी शब्दकोश– J. T. Molesworth and T. Candy
- भारतीय अर्थव्यवस्था– डॉ. देसाई, डॉ. सौ भालेराव

संदर्भ के लिए संकेत स्थल :

- http://www.kidsgeog.com
- http://www.wikihow.com
- http://www.wikipedia.org
- http://www.latlong.net
- http://www.ecokids.ca
- http://www.ucar.edu
- http://www.bbc.co.uk/schools
- http://www.globalsecurity.org
- http://www.nakedeyesplanets.com
- http://www.windy.com
- http://science.nationalgeographic.com
- http://en.wikipedia.org
- http://geography.about.com
- http://earthguide.uced.edu